अंक 37

वर्ष-10वां

जनवरी –मार्च 2016

चहकती चेतना

प्रकाशन का गौरवमयी 10वाँ वर्ष

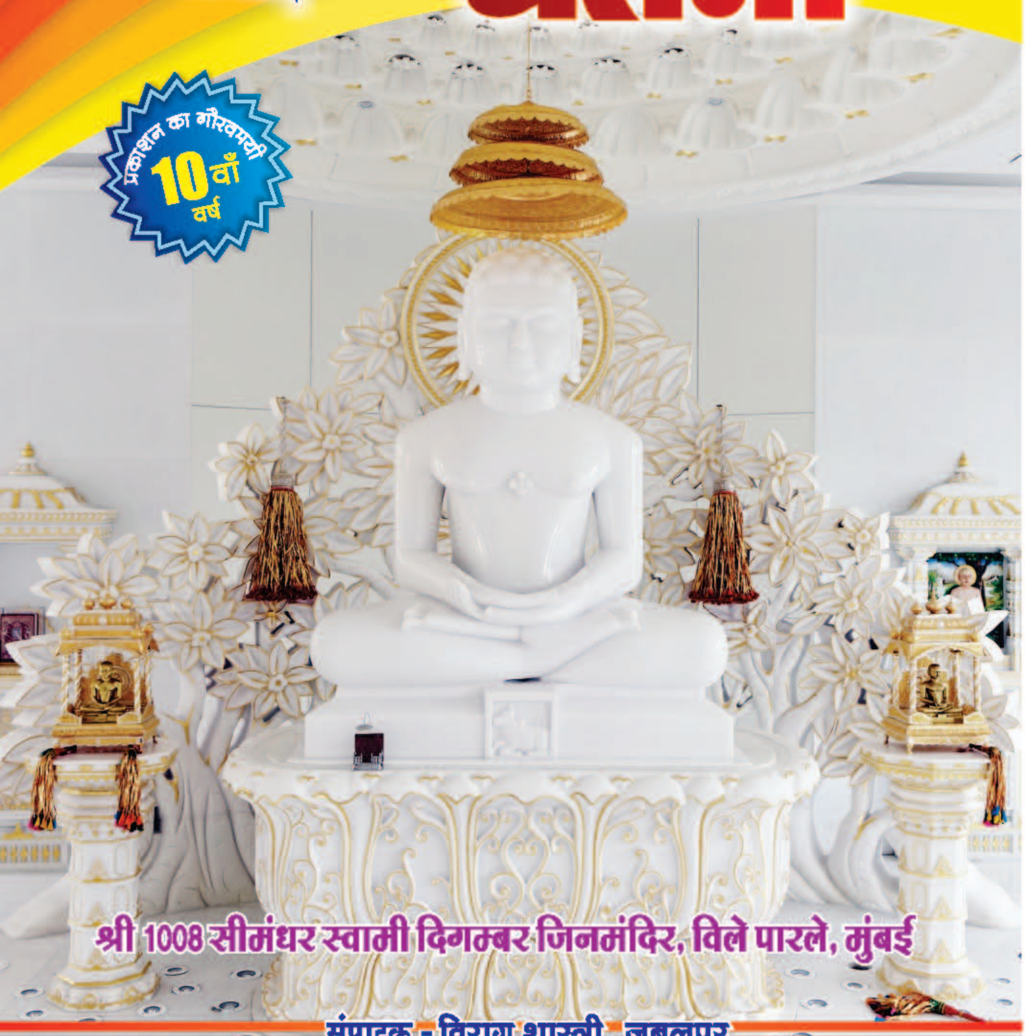

श्री 1008 सीमंधर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर, विले पारले, मुंबई

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

शब्द बिना गहरी बात

(देखो और समझो)

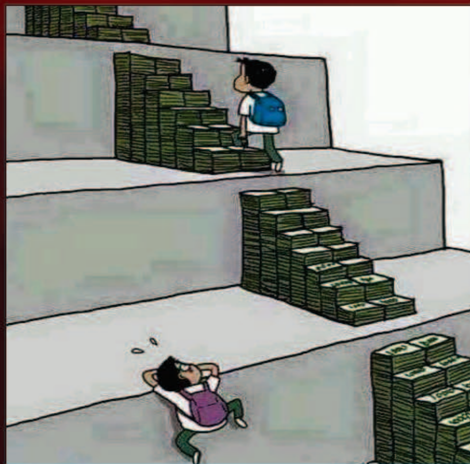

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

JULY - SEPT. 2015

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई
संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.
संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर
प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर
डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक
श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
श्रीमती आरती जैन, कानपुर
संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
"चहकती चेतना"
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

क्र.	विषय	पेज
1.	तिरुपति बालाजी........	2
2.	संपादकीय	3
3.	हमारे तीर्थक्षेत्र - सोनागिर	4
4.	कुछ निवेदन........	5
5.	परिणामों का फल.....	6-7
6.	सॉरी बाबाजी.....	8-9
7.	बलराम की पीठ......	10
8.	बिल्ली पर हुआ	11
9.	कविता-हाथों से...	12
10.	चोर को हुआ वैराग्य	13
11.	ऐसा क्यों हुआ....	14
12.	मोबाईल के	15
13.	कैलेण्डर - 2016	16-17
14.	कवितायें....	18
15.	ये भी विचारिये	19
16.	क्या आपने ये सोचा है	20-21
17.	प्रश्न आपके	22
18.	मेरी भावना	23
19.	सत्य घटना	24
20.	प्रेरक प्रसंग	25
21.	एक शौक ऐसा भी......	26
22.	संस्मरण....	27
23.	जिनवाणी संरक्षण योजना..	28
24.	जिनदेव के दर्शन से लाभ	29
25.	चिड़ियाघर	30
26.	सावधान	31
27.	संसार में सुख	32

सदस्यता शुल्क - 400 रु. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रु. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

ये है हिन्दुओं के तीर्थ तिरुपति बालाजी के भगवान अर्थात् भगवान नेमिनाथ

यह बात लगभग सभी जैन धर्म प्रेमी जानते हैं कि प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ तिरुपतिबालाजी के बालाजी भगवान और कोई नहीं बल्कि हमारे बाईसवें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ हैं। इस सम्बन्ध अनेक प्रमाण प्रस्तुत किये जा चुके हैं। इस नेमिनाथ भगवान की प्रतिमा (जिसे सभी बालाजी के नाम से जानते हैं) को आज तक किसी नग्न मुद्रा में नहीं देखा क्योंकि उस पर सदैव आभूषण रहते हैं और आभूषण बदलते समय दरवाजे बन्द कर दिये जाते हैं। कुछ विशिष्ट पण्डित ही यह कार्य करते हैं। इन पण्डितों के अतिरिक्त प्रतिमा के बहुत पास जाने की किसी को भी अनुमति नहीं है। प्रतिमा का प्रतिदिन अभिषेक भी किया जाता है। किसी व्यक्ति ने अभिषेक के समय यह फोटो मोबाइल से ले ली।

ये है हमारा गौरवमयी जैन शासन ।

संपादकीय

प्यारे पाठको! आप सबको फिर एक बार मेरा जय जिनेन्द्र। 2015 वर्ष बीत गया और 2016 वर्ष का आगमन हुआ। सभी लोगों ने अलग-अलग तरह से नये वर्ष का स्वागत किया। परन्तु यह विचार करने की बात है कि वर्ष तो बदला परन्तु हमारे अन्दर क्या परिवर्तन आया क्या हमारे परिणामों में निर्मलता बढ़ी है 2015 में हमने ऐसा कौन सा कार्य किया जो हमारे गौरव में वृद्धि करने वाला है। यदि ऐसा कुछ नहीं किया तो हम संकल्प करें कि 2016 में अपने जीवन में सकारात्मक करेंगे। जिनेन्द्र दर्शन,पूजन, तीर्थयात्रा, पाठशाला, दान, त्याग, जैसे कार्यों से हम अपने भविष्य को सुरक्षित करेंगे।

आप सबने भारतीय जीवन बीमा निगम का नाम सुना होगा, इसे शार्ट में एलआईसी भी कहा जाता है जो हमें भविष्य में आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने के लिये प्रतिमाह कुछ राशि लेती है और निश्चित समय के बाद हमें जमा राशि से अधिक राशि वापस करती है। कुछ पोलिसी ऐसी होती हैं जिनमें रुपये हम जमा करते हैं और हमारे मरने के बाद जमा राशि परिवार वालों को मिलती है। इस 70 - 80 वर्ष के जीवन की हमें इतनी चिन्ता है और अनन्त भव के जीवन के लिये हमारे कौनसी पोलिसी ली ? तो जीवन धर्म पोलिसी लीजिये जिसमें धन नहीं त्याग, करुणा, दया, शान्ति, जिनदर्शन आदि के परिणामों से अपना जीवन सफल बनाइये। इससे यह जीवन तो सुखमय होगा ही साथ आगामी भव भी सुन्दर और सुखमय होगा।

साथ ही आपकी परीक्षायें भी आने वालीं हैं,तो अभी से आप तैयार हो जाईये और अपनी पढ़ाई पर विशेष ध्यान दें।

यही वीर निर्वाण दिवस की सार्थकता है।मुझे विश्वास है कि आप मेरी बात पर अवश्य ध्यान देंगे।

- आपका ही

विराग शास्त्री

हमारे तीर्थ -

सिद्धक्षेत्र सोनागिर

मध्यप्रदेश के दतिया जिले में दतिया से 15 किमी की दूरी पर स्थित सिद्धक्षेत्र सोनागिर अत्यंत रमणीय एवं पवित्र स्थान है। इसका पूर्व नाम स्वर्णगिरि है। लगभग 84 सीढ़ियाँ हैं और पहाड़ 77 प्राचीन जिनमंदिर हैं। पहाड़ पर एवं तलहटी में भी अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है। सोनागिर निम्न विशेष कारणों से प्रसिद्ध है -

1. चौथे काल में चक्रवर्ती भरत दिग्विजय के समय यहाँ पधारे थे। चक्रवर्ती भरत के नाम हमारे देश का नाम भारत हुआ। इन्होंने यहाँ जिनमंदिर बनवाये। इन जिनमंदिरों की वन्दना करने द्वितीय चक्रवर्ती सम्राट सगर आये थे।
2. आठवें तीर्थंकर भगवान चन्द्रप्रभ का समवशरण यहाँ 15 बार आया।
3. धनंजय, अमृत, विजय आदि 1500 राजाओं ने यहाँ दिगम्बर दीक्षा अंगीकार की।
4. सोनागिर तीर्थ से श्रीपुर के राजा अरिंजय के दो पुत्र राजकुमार नंगकुमार और अनंग कुमार पाँच करोड़ पचास लाख मुनिराजों निर्वाण पद प्राप्त किया।
5. उज्जैन के श्रीदत्त राजा ने 2000 राजाओं के साथ दिगम्बर मुनिव्रत अंगीकार किया।
6. मुनिसुव्रत भगवान के समय में राम, लक्ष्मण और सीताजी ने इस तीर्थ की वन्दना की।
7. भगवान नेमिनाथ के समय में युधिष्ठिर आदि पाँच पाण्डवों ने सोनागिर की वन्दना की।
8. सोनागिर पहाड़ पर नारियल कुण्ड और बाजनी शिला आकर्षण का केन्द्र है।
9. तलहटी पर स्थित कुन्दकुन्द नगर एवं परमागम के जिनमंदिर अत्यंत मनोज्ञ एवं दर्शनीय हैं।

सोनागिर से गोपाचल पर्वत (ग्वालियर) 65 किमी, सिहोंनियाजी 120 किमी, करगुवाँजी झांसी 50 किमी की दूरी पर स्थित है। सोनागिरजी में आवास एवं भोजन की पर्याप्त सुविधायें उपलब्ध हैं।

कुछ निवेदन
माता-पिताओं से...

आजकल 95 प्रतिशत बच्चे तेज दिमाग वाले और बातूनी होते हैं। वे हर बात पर तर्क करने के लिये तैयार ही रहते हैं। हमारी उम्मीदें बच्चों से बहुत अधिक हैं और हम उसे श्रेष्ठ विद्यार्थी, श्रेष्ठ क्रिकेटर, अच्छी जॉब वाला या श्रेष्ठ संगीतकार आदि के रूप में देखना चाहते हैं। औसत बच्चा किसी को स्वीकार नहीं है और सत्य यह है कि हर बच्चा श्रेष्ठ कैसे हो सकता है? हमारी संतान श्रेष्ठ श्रावक बने हमें यही प्रयास करना चाहिये। शेष सभी संयोग तो हमारे कर्म उदय से जो मिलना होंगे वे मिलेंगे।

1. छोटे से छोटे सा बच्चा सब समझता है सिर्फ बोल नहीं सकता। इसलिये उनके सामने ऐसा कोई भी काम मत कीजिये जिसे आप सही नहीं समझते।
2. बच्चे का रोना हर बार अलग - अलग होता है, वह अपनी बात को कहकर नहीं रोकर ही व्यक्त कर सकता है। इसलिये 'बच्चा रो रहा है' ऐसा न कहकर 'बच्चा क्या कह रहा है' यह कहिये।
3. छोटे-छोटे सा बालक हर समय कुछ न कुछ सीखता है इसलिये उसके सामने वही कार्य करें जो एक आदर्श व्यक्ति में होते हैं। यदि आप चाहते हैं कि बच्चा आपकी कीमती चीज न फेके तो आपको केले का छिलका भी डस्टबिन में डालना चाहिये। अपने घर का माहौल धर्ममय में होना चाहिये।
4. बच्चा जन्म से अहिंसक होता है। पर हमारे द्वारा दिये बन्दूक आदि हिंसक खिलौने, हिंसक वीडियो गेम और हमारी हिंसक भाषा बच्चे को हिंसा के संस्कार देती है।
5. बच्चा जन्म से सत्यवादी होता है परन्तु हमारे घर और परिवार के सदस्यों का वातावरण उसे झूठ के संस्कार डाल देता है।
6. बच्चा अचौर्य के संस्कार वाला होता है, पेट भर जाने के बाद अथवा किसी खिलौने से तृप्त हो जाने के बाद उसे छोड़कर आगे बढ़ जाता है।
7. बच्चा जन्म से ब्रह्मचारी होता है। उसमें वासना का उदय नहीं है, इसलिये वह सहज भाव से सभी के साथ समान व्यवहार करता है।
8. बच्चा पैदाइशी अपरिग्रही होता है, उसे अपने कपड़ों के न फटने की परवाह होती है न मैले होने की।
9. जिन बच्चों में को प्यार कम मिलता है या बहुत अधिक प्यार मिलता है तो उनमें से अधिकांश बच्चे बिगड़ जाते हैं।
10. यदि आप चाहते हैं कि बच्चे टीवी कम से कम देखें तो आपको भी टीवी कम से कम देखना होगी।

ये सारी बातें सामान्य जीवन के शोध के आधार पर बताईं गईं हैं। हम अपने बालकों को अपने घर-परिवार, भाषा-व्यवहार आदि में मधुरता और जीवन में संयम और सदाचारमय जीवन जीकर उन्हें सहज ही संस्कारित कर सकते हैं।

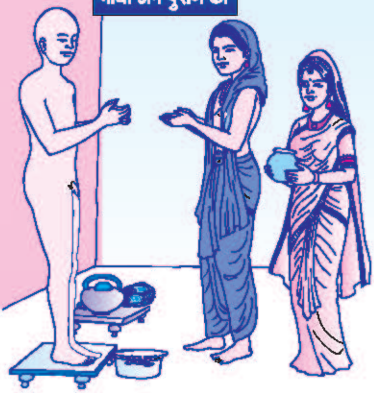

परिणामों का फल

भरत क्षेत्र की चम्पापुरी नगरी में राजा मेघवाहन की नगरी में सोमदेव ब्राह्मण और उसकी पत्नी सोमिला रहते थे। उसके सोमदत्त, सोमिल और सोमभूति नामक तीन पुत्र थे। उनके मामा अग्निभूति, मामी अग्निला के धनश्री, मित्रश्री एवं नागश्री नाम की तीन पुत्रियाँ थीं। इन तीनों का विवाह क्रमशः सोमदत्त, सोमिल और सोमभूति के साथ हुआ। इनमें तीसरे भाई सोमभूति की पत्नी नागश्री जिनधर्म की विरोधी थी।

एक दिन उनके घर में धर्मरुचि नाम के मुनिराज का आहार हुआ। नागश्री ने मुनिराज को आहार में विष दे दिया। जिससे मुनिराज का मरण हो गया और वे सर्वार्द्धसिद्धि स्वर्ग में गये। इस घटना को देखकर तीनों भाईयों को वैराग्य हो गया और तीनों ने मुनिदीक्षा अंगीकार कर ली। धनश्री और मित्रश्री ने आर्यिका के व्रत धारण कर लिये और निरन्तर आत्म आराधना करते हुये समाधिमरणपूर्वक वे सभी अच्युत स्वर्ग में देव हुये।

मुनिराज को विष देने के कारण नागश्री मरकर पाँचवे नरक गई। वहाँ से निकलने के बाद अनेक तिर्यन्च आदि पर्यायों को धारण करने के बाद चम्पापुर में एक चाण्डाल की पुत्री हुई। वहाँ एक बाद समाधिगुप्त नाम के मुनिराज की प्रेरणा और उपदेश से शराब-मांस और शहद का त्याग कर दिया और मरकर चम्पापुरी में ही सुबन्धु नाम के सेठ के यहाँ सुकुमारिका नाम की पुत्री हुई। धनवान सेठ के यहाँ जन्म तो हो गया परन्तु पूर्व पाप के उदय के कारण वह सुन्दर होने के बाद भी उसके शरीर से बहुत दुर्गन्ध आती थी इसलिये सभी उसे दुर्गन्धा कहते थे।

दुर्गन्धा का विवाह चम्पापुर के सेठ धनदेव के बड़े पुत्र जिनदेव के साथ हो गया। जिनदेव को जब दुर्गन्धा के शरीर की गन्ध के बारे में पता चला तो वह उस छोड़कर मुनि बन गया। परिवार के आग्रह पर धनदेव के छोटे पुत्र जिनदत्त ने दुर्गन्धा के साथ कर लिया और विवाह के तुरन्त बाद वह व्यापार के लिये दूर देश चला गया। यह सब देखकर दुर्गन्धा अपने पूर्व के पापों का उदय जानकर दुःखी रहने लगी। एक दिन उसके घर में क्षाता नाम की आर्यिका के आहार हुये। उनके साथ नव दीक्षित युवा आर्यिकाओं के वैराग्य का कारण जानकर दुर्गन्धा को वैराग्य हो गया ओर उसने आर्यिका दीक्षा अंगीकार कर ली।

एक दिन गन्दे परिणामों वाली बसन्तसेना नाम की एक स्त्री पाँच पुरुषों के साथ वन में आई। दुर्गन्धा आर्यिका वहीं पर ध्यान कर रही थी, बसन्तसेना को पाँच पुरुषों के साथ देखकर दुर्गन्धा भाव आया कि यह स्त्री कितनी सौभाग्यवती है। इस परिणाम से उसे अपयश प्रकृति का बंध हो गया। बाद में दुर्गन्धा आर्यिका समाधिमरणपूर्वक मरण कर स्वर्ग में देवी हुई। वहाँ से आयु पूरी कर राजा द्रुपद की रानी दृढ़रथा के यहाँ द्रोपदी नाम की राजकुमारी हुई।

पूर्व पर्याय नागश्री का पति जिसका नाम सोमदत्त ब्राह्मण था वह आयु पूरी कर कुन्ती पुत्र अर्जुन हुआ। सोमदत्त और सोमदेव रानी कुन्ती के ही युधिष्ठिर और भीम हुये और धनश्री, मित्रश्री के जीव रानी माद्री नकुल और सहदेव हुये। द्रोपदी का विवाह अर्जुन से हुआ। विवाह के समय जब द्रोपदी अर्जुन को वरमाला पहना रही थी तब अर्जुन के चारों भाई उसके ही पास खड़े थे। वरमाला पहनाते समय वरमाला टूटकर बिखर गई और उसके फूल चारों भाईयों के ऊपर गिरे तब वहाँ उपस्थित लोग कहकर हंसी करने लगे कि द्रोपदी ने पाँचों भाईयों से विवाह किया है, इसलिये द्रोपदी को पाँच पतियों की पत्नी के अपमानजनक शब्द सुनने पड़े।

भगवान नेमिनाथ की दिव्यध्वनि में यह सारा वर्णन सुनकर पाँच पाण्डवों को वैराग्य हो गया और उन्होंने मुनि दीक्षा ले ली। द्रोपदी, माता कुन्ती, सुभद्रा आदि रानियों ने भी राजमति आर्यिका के पास जाकर आर्यिका दीक्षा ले ली। युधिष्ठिर, अर्जुन और भीम ने अपूर्व तप करके मुक्ति पद की प्राप्ति की, नकुल और सहदेव सर्वार्द्धसिद्धि स्वर्ग गये और एक भव के बाद मोक्ष जायेंगे। द्रोपदी अच्युत स्वर्ग में देवी हुई और भविष्य में वहाँ से आकर मनुष्य पर्याय धारण कर मोक्ष पद प्राप्त करेगी।

आपने पढ़ा कि मुनियों के प्रति अनुचित कार्य और एक गलत परिणाम के कारण द्रोपदी को भयंकर कष्ट सहना पड़े अतः हमेशा अपने परिणाम अच्छे बनाये रखने का प्रयास करना चाहिये।

- साभार : हरिवंश पुराण

सॉरी दादाजी....

दिन भर सफाई करते रहो,इन बच्चों के कारण के कारण सारा समय घर के ही काम में निकल जाता है। लेकिन ये बच्चे भी ना बिल्कुल बात नहीं मानते।

क्या हुआ मम्मी! हम आपकी कौनसी बात नहीं मानते?

विभु! तुम अपनी कॉपी के कितने पेज फाड़ते हो। रोज कचरे में इतने सारे पेज पड़े हुये मिलते हैं।

अरे मम्मी! कुछ गलत हो जाता है तो पेज फाड़ना ही पड़ता है और मम्मी! क्या फर्क पड़ता है? अपने पास तो ढेर सारी कॉपियाँ रखीं हैं। आप भी छोटी-छोटी सी बात पर दुःखी होती हो।

विभु! तुम दसवीं कक्षा में आकर भी बचपने की बात करते हो। हम तुम्हारी पढ़ाई की सारी व्यवस्था करते हैं तो इसका मतलब यह नहीं कि तुम अपनी गलत बात को भी सही सिद्ध करो।

इसमें गलत बात क्या है मम्मी! आप तो ऐसे कह रही हो जैसे कोई पाप कर दिया हो....

हाँ! पाप ही किया है बेटा!- दादाजी ने विभु को टोकते हुये बोले।

क्या दादाजी! आप भी मम्मी की तरफ ही बोल रहे हैं।

बात किसी की तरफ की नहीं है विभु! बात सच की है और तुमने दो पाप किये हैं।

मैं समझा नहीं दादाजी। जरा बताइये कैसे ?

पहली बात - तुम्हें अपनी मम्मी से गलत तरीके से बात नहीं करनी चाहिये। यदि कोई बात समझ में नहीं आ रही हो तो उसे विनयपूर्वक भी कह सकते थे। कोई भी माँ अपनी संतान को गलत बात नहीं सिखाती।

दूसरी बात - अनावश्यक कागज फेंकना और फाड़ना पाप ही तो है। यदि पहले ही सावधानी रखी जाये तो पेपर फाड़ने का अवसर ही नहीं आयेगा।

लेकिन ये पाप कैसे हुआ दादाजी!

तुम तो जानते ही हो कि पेपर कैसे बनता है। यदि नहीं पता हो तो इंटरनेट पर यू ट्यूब पर देख सकते हो। पेड़ों को काटकर उसे गलाकर बहुत लम्बी प्रक्रिया के बाद पेपर बनता है। हम जितना पेपर उपयोग करेंगे उतने ही ज्यादा पेड़ों को काटकर पेपर का उत्पादन किया जायेगा। आखिर पेड़ काटना भी तो हिंसा है। हमें परोक्ष रूप से उस हिंसा का पाप लगेगा ही।

तो क्या पुस्तक छपाना, कॉपी बनाना बन्द कर दें, फिर पढ़ाई और दूसरे काम कैसे होगें ? विभू ने हाथ मटकाते हुये कहा ।

विभु! पढ़ना-लिखना हमारे जीवन का आवश्यक कार्य है। इसलिये इसका छपना तो बन्द नहीं हो सकता लेकिन हम इतना तो कर ही सकते हैं कि इसके दुरुपयोग को रोकें। अनावश्यक पेपर बरबाद न करें। एक ओर प्रिन्ट किये पेपर को दूसरी ओर भी प्रयोग करें- दादाजी ने सिर पर हाथ रखकर समझाया ।

बात तो आपकी सही है दादाजी!

बेटा! गृहस्थ अवस्था में पाप तो होते ही हैं परन्तु हम जितने पापों और अनावश्यक क्रियाओं से बच सकें उतना प्रयास हमें करना चाहिये और बड़ों का सम्मान तो तुम कर ही सकते हो ना।

सॉरी दादाजी! अब आगे से मैं सबसे सम्मान से बात करूँगा और अनावश्यक पेपर बरबाद भी नहीं करूँगा - विभू कान पकड़कर बोला ।

सॉरी मुझे नहीं ....अपनी मम्मी को बोलो।

सॉरी मम्मी।

ओके बेटा! और थैंक्स । तुमने दादाजी की बात का सम्मान रखा।

- विराग शास्त्री, जबलपुर

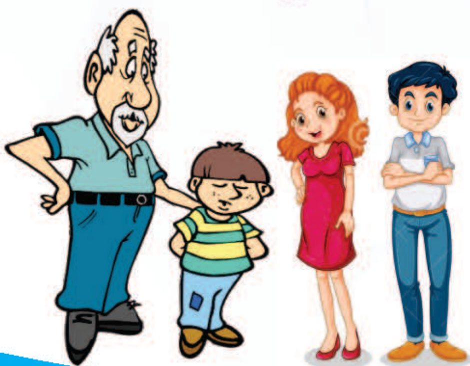

बलराम की पीठ

महाराष्ट्र प्रान्त के सटाणा जिले के मांगीतुंगी तीर्थ में स्थापित यह प्रतिमा श्रीकृष्ण के भाई बलराम की है।

वैराग्य आने पर बलराम ने मुनि दीक्षा ले ली। जब वे आहार के लिये जंगल से कंचनपुर नगर की ओर निकले। उसी समय कुछ महिलायें पानी कुयें से पानी भरने जा रहीं थीं। वे मुनिराज के सुन्दर रूप को देखकर इतनी तल्लीन हो गईं कि वे मटके में रस्सी बांधने की बजाय अपने छोटे-छोटे बच्चों के गले में रस्सी का फन्दा डालकर कुयें में डालने लगीं। यह दृश्य देखकर मुनिराज अंतराय मानकर बिना आहार किये जंगल वापस चले गये। उन्होंने विचार किया कि मेरे शरीर के सौन्दर्य से बच्चों के प्राण संकट में आ जाते हैं,मैं ऐसा रूप क्यों दिखाऊँ ? मुनिराज ने गांव की ओर पीठ और पर्वत की ओर मुख कर लिया।

आज भी बलराम की पीठ के दर्शन होते हैं।

विनय

एक दिन पानी से भरे कलश से ऊपर रखी कटोरी ने कहा - कलश यह पक्षपात क्यों ? जो भी तुम्हारे पास आता है, तुम उसे जल से भर देते हो, पर मैं तुम्हारे साथ हमेशा रहती हूँ परन्तु मुझे कभी जल नहीं मिलता।

कलश ने उत्तर दिया - बहन ! जो मेरे पास विनय भाव से ग्रहण करने आता है, मैं उसे संतुष्ट करके भेजता हूँ, परन्तु तुम हमेशा अभिमान के साथ मेरे सर पर चढ़ी रहती हो तो मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूँ ? तुम अभिमान छोड़ो और नीचे आओ तो तुम्हें भी जल प्राप्त होगा।

कटोरी को बात समझ में आ गई।

ऐसे ही जिनवाणी का ज्ञान विनय चित्त वाले जिज्ञासु जीव को ही प्राप्त होता है।

मिथ्यात्व के अहंकारी को जिनवाणी की अमृत देशना नहीं मिलती।

दिल्ली पर हुआ एक जैन शासक का राज

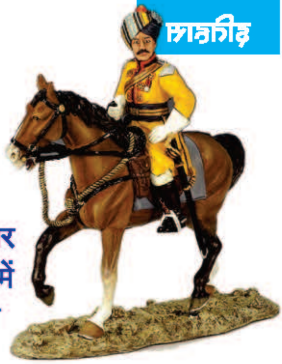

भारतीय इतिहास में मुगल बादशाह अकबर से पहली बार युद्ध करने की हिम्मत करने वाला हेमू था। पानीपत के मैदान में हेमू बहुत वीरता से लड़ रहा था, युद्ध में एक तीर उसकी आंख में लगा और वह नीचे गिर गया। उसके गिरते ही उसकी सेना का मनोबल गिर गया और वे युद्ध हार गये। हेमू कोपकड़कर बादशाह अकबर के सामने प्रस्तुत किया गया। अकबर के दरबार में बैरमखाँ ने अपनी तलवार से हेमू का सर काट दिया।

वीर हेमू का परिचय इस प्रकार है। मंडोवर (मारवा) के राजा नानुदेवजी पडिहार की बाईसवीं पीढ़ी में राजपालजी का जन्म सन् 1530 में हुआ। इनसे सन् 1554 में हेमराज का जन्म हुआ। हेमराज का विवाह लाहौर के सूरतसिंह जी पुत्री कुन्दनदेवी के साथ हुआ। हेमराज युद्धकला में निपुण थे, इस कारण उनकी मित्रता फरीदखाँ पठान से हो गया। फरीद खाँ को इब्राहिम लोदी ने 500 युद्ध के घुड़सवारों का सरदार बना दिया। सन् 1601 में शेरखाँ का पुत्र शहजादा सलीम दिल्ली का राजा बना तब उसका प्रधान सेनापति हेमराज को बनाया गया, जो कि हेमू के नाम से प्रसिद्ध हुआ। सलीम शाह के 9 वर्ष के शासन के बाद उसके भाई आदिल शाह को राज्य मिला। परन्तु एक वर्ष बाद ही उसकी मृत्यु हो गई और दिल्ली पर हेमू का अधिकार हो गया। हेमू क्षत्रिय वंश का था और उसके पूर्वज जैनधर्म धारण कर चुके थे।

मैं कौन हूँ

दक्षिण के ब्राह्मण ने अपनी पत्नी से कहा - आज सब्जी में नमक क्यों नहीं डाला पत्नी ने उत्तर दिया - पचास वर्ष की उम्र में भी तुम्हारा जीभ का चटोरापन नहीं गया। ब्राह्मण ने कहा - देवी! तुमने मेरी आंखें खोल दीं। अब मुझे अपना चटोरापन मिटाना ही पड़ेगा। यह कहकर वे साधु बन गये। किन्तु वहाँ भी चैन नहीं मिला तब वे मुसलमान बन गये। बाद में अपनी भूल का अहसास होने पर बहुत रोये। फिर कुछ विद्वानों ने मिलकर उन्हें अपने पुराने धर्म में दीक्षित कर लिया। उन्हें कुछ लोग 'मुल्ला' कहकर चिढ़ाते थे। बाद में एक जैन दिगम्बर साधु ने बताया कि सभी समस्याओं का उपाय अपनी आत्मा को जानना है। मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, जगत में सभी जीव अलग-अलग स्वभाव और संयोगों के साथ क्यों दिखाई देते हैं आत्मा न हिन्दू है न मुसलमान। तुम तो भगवान की तरह शुद्धात्मा हो। इतना सुनकर ब्राह्मण प्रसन्न हो गया। उसे लगा कि जिसकी खोज वह कर रहा है वह मार्ग इन्हीं के पास है और वे दिगम्बर साधु बनकर आत्मसाधना में लीन हो गये।

हाथों से -

हाथों से आशीर्वाद दूँ,
हाथों से ही दूँ स्नेह।
हाथ उठाकर करूँ समर्थन,
सत्कार्यों का सदा सनेह।।
हाथ उठाऊँ नहीं कभी मैं,
सज्जन या असमर्थों पर,
हाथ बटाऊँ उत्साहित हो,
उठता जाये जीवन ऊपर।।

हाथों से-

हाथ जोड़कर विनय करूँगा।
सेवा और सहयोग करूँगा।
हर्ष सहित मैं दान करूँगा।
आवश्यक श्रम दान करूँगा।।
अवसर पर हथियार उठाकर,
विघ्न अरक्षा दूर करूँगा।
रखकर हाथ पे हाथ अहो मैं,
प्रभु सम आतम ध्यान करूँगा।।

- बा. ब्र. रवीन्द्रजी आत्मन्

तीर्थंकरों में कितना बल होता है...

दो हजार सिंहों का बल एक अष्टापद में,
दस लाख अष्टापदों का बल एक बलदेव में,
दो बलदेवों का बल एक वासुदेव में,
दो वासुदेवों का बल एक चक्रवर्ती में,
एक करोड़ चक्रवर्तियों का बल एक देव में,
एक करोड़ देवों का बल एक इन्द्र में,
ऐसे असंख्यात बलशाली इन्द्र मिलकर भी तीर्थंकर प्रभु की कनिष्ठिका अर्थात् छोटी उंगली को हिला भी नहीं सकते।

चोर को हुआ वैराग्य

पोदनपुर के राजा विद्युतराज और रानी विमलमती के यहाँ विद्युत्प्रभ का जन्म हुआ। विद्युत्प्रभ बचपन से ही बहुत साहसी और पराक्रमी था। परन्तु बचपन में कुसंगति के कारण उसे चोरी की आदत पड़ गई। राजकुमार होने के कारण उन्हें सारी सुविधायें प्राप्त थीं परन्तु उन्हें चोरी के कार्य में आनन्द आता था, चोरी उनका शौक बन गया था। छोटी-छोटी चोरियाँ करते-करते अपने साथियों के साथ वह अब बड़ी-बड़ी चोरियाँ करने लगा था। पिता ने बहुत समझाया, डांटा और राज्य का राजा बनाने का प्रलोभन भी दिया परन्तु उसने अपने पिता की कोई बात नहीं मानी। वह अपने पिता से स्पष्ट बोला कि यदि आप मुझे अपना सारा राजपाट और धनसम्पत्ति भी दें तो में चोरी करना नहीं छोड़ूँगा।

एक बार वह अपने 500 साथी चोरों के साथ राजगृही नगरी में गया और नगर में चोरियाँ करता रहा। उसी नगर में एक दिन जम्बूकुमार का विवाह 4 राजकुमारियों के साथ हुआ। विद्युत्प्रभ चोर उसी रात उनके घर चोरी करने के इरादे से पहुँचा और खिड़की से देखा कि जम्बू कुमार रात्रि में अपनी चारों पत्नियों के साथ धर्मचर्चा कर रहे थे और सुबह होने पर उन्होंने दीक्षा की भावना व्यक्त की। उनके माता-पिता ने बहुत समझाया लेकिन जम्बू कुमार नहीं माने। तभी विद्युत्प्रभ को पकड़ लिया गया। जम्बूकुमार की माता बोलीं - ये सारी सम्पत्ति ले जाओ। मेरा एकमात्र पुत्र जब दीक्षा ले लेगा तो मैं इस सम्पत्ति का क्या करूँगी?

विद्युत्प्रभ ने उनकी माता के सामने प्रण किया कि मैं जम्बूकुमार को समझाऊँगा और घर वापस लेकर आऊँगा। यदि वापस न सका तो मैं भी साधु बन जाऊँगा। विद्युत्प्रभ ने जम्बूकुमार को रोकने का बहुत प्रयास किया परन्तु जम्बूकुमार नहीं माने। तब विद्युत्प्रभ को भी वैराग्य हो गया और उसने अपने 500 साथियों के साथ मुनिदीक्षा ले ली और अनेक उपसर्ग सहन करते हुये बहुत तप किया। अन्त में अपनी आयु समाप्त कर तप के प्रभाव से वह अहमिन्द्र पद को प्राप्त किया।

कोई लाख करे चतुराई, करम का लेख मिटे न रे भाई...

ऐसा क्यों हुआ

महाभारत के प्रमुख पात्र भीष्म पितामह पूर्व भव मे राजकुमार थे। वे धनुषविद्या में बहुत कुशल थे। एक बार वे जंगल में शिकार खेलने गये वहाँ उन्हें एक सांप दिखा। सर्प को देखते ही उन्होंने सांप के ऊपर एक बाण मारा जिससे वह घायल हो गया। उन्होंने सांप को बाण से उठाकर उसे कंटीली झाडियों में फेंक दिया। वह सांप उस झाड़ी में तड़फ-तडफकर मर गया। भीष्म को पूर्व भव में किये इस पाप कार्य का यह फल मिला कि उनकी मृत्यु के पूर्व उनके पूरे अंग बाणों से घायल हो गये। भीष्म पितामह ने जीवन भर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया और वे बहुत वीर थे परन्तु पूर्व भव में किये परिणाम का फल भोगना ही पड़ा।

इसी तरह धृतराष्ट्र पूर्व भव में एक राजा थे। उनमें राजा पद के योग्य सदाचार, न्यायशीलता, वीरता आदि समस्त गुण थे लेकिन उनमें एक बड़ा दुर्गुण भी था। वे भोजन के बहुत लोलुपी थे। जीभ के स्वाद के लोभ में हित-अहित सभी भूल जाते थे। एक उनके भोजन बनाने वाले रसोईये ने उनके भोजन में हंस के बच्चे का मांस मिलाकर खिला दिया। राजा ने स्वाद के लोभ में यह भी नहीं पूछा कि आज के भोजन में यह स्वाद क्यों आ रहा है रसोईये ने राजा की सहमति समझकर हंस के 100 बच्चों का मांस पकाकर राजा को खिलाया।

न्याय, सत्यवादिता आदि सद्‌गुणों के कारण राजा पुनः आगामी भव में राजा धृतराष्ट्र बना। परन्तु स्वाद के लोभ में जानकारी नहीं लेने के कारण अंधे हुये और हंस के सौ बच्चों का मांस खाने के कारण उनके सौ पुत्र उनके सामने ही मरण को प्राप्त हुये।

कथा का आशय यह ही है कि परिणामों का फल अवश्य प्राप्त होता है, अतः सदा अपने परिणाम क्षमा,दया,मैत्री, करुणा और देव-शास्त्र-गुरू की भक्तिमय होना चाहिये।

जीवन में तीन बातें कभी भी हो सकतीं हैं - • कर्म का उदय कब आ जाये • गति का बन्ध कब हो जाये • आयु का अन्त कब हो जाये
इसलिये अपने परिणाम सदा संभाल करना चाहिये।

मोबाईल ने छीनी उंगलियां

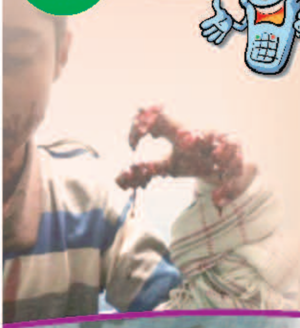

इस बालक को देखिये ।
देखकर डर लग रहा होगा ना।
इस बालक के पिता ने मोबाइल
का चार्ज पर लगाया था और चार्ज
होते हुये फोन पर गेम खेल रहा था।
मोबाइल गरम होने पर फट गया और
उसके दोनों हाथों की उंगलियाँ
विस्फोट में उड़ गईं।

दूसरी घटना में गुजरात के सूरत में एक यह युवक चार्ज में लगे हुये एंड्रायड मोबाइल फोन में गेम खेल रहा था और इसी समय फोन आ गया। गेम खेलने से वैसे ही फोन गरम हो गया था और वैसे ही उसने बात करना प्रारम्भ कर दी तो मोबाइल फट गया। मोबाइल में हुये विस्फोट से वह तुरन्त मर गया। देखिये वह दर्दनाक दृश्य -

Candy Crush SAGA

कैंडी क्रश खेलने से हो गया अंगूठा खराब

अमेरिका के कैलिफॉर्निया में एक 29 साल के व्यक्ति को कैंडी क्रश गेम की ऐसी लत लगी कि उसके अंगूठे ने काम करना बंद कर दिया । यह व्यक्ति कई घंटों तक लगातार गेम को खेलता रहता था । गेम खेलने के दौरान अंगूठे का सबसे अधिक प्रयोग होता है । इस कारण से उसके अंगूठे का एक टिशू फट गया । डॉक्टर को दिखाने के बाद यह पाया गया कि अधिक गेम खेलने के कारण से उसके अंगूठे की मांसपेशियों पर अधिक दवाब पड़ता हैं इस कारण से अंगुलियां खराब होना स्वाभाविक है । सर्जरी के बाद भी इस व्यक्ति के अंगूठे ने पहले जैसा काम करना बंद कर दिया है ।

जैन जगत की एकमात्र बाल युवा पत्रिका

चहकती चेतना

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

जनवरी

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

फरवरी

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29					

मार्च

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

अप्रैल

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

मई

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

जून

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

जुलाई

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

अगस्त

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

सितम्बर

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

अक्टूबर

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

नवम्बर

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

दिसम्बर

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

आज ही सदस्य बनिये। संपर्क : 9300642434 E-mail : chehaktichetna@yahoo.com

कविता -

पतंग

दो रुपया लेकर गया, मैं भईया के संग।
जिसमें लेकर आ गया,मांझा और पतंग।
आसमान में खेल रही हैं, रंग बिरंगी पतंग।
पेंच लड़ाया कट गई, पक्षी की गरदन ।
घायल होकर गिर गया, देख रह गया दंग ।
कभी नहीं उड़ाऊँगा, हिंसक यह पतंग।।

प्यारी मम्मी

मेरी मम्मी सबसे अच्छी,मंगल गीत सुनाती है।
फिर चावल की डिब्बी देकर, जिनमंदिर पहुँचाती है।
दर्शन की महिमा बतलाकर,पूजन पाठ सिखाती है।
सोते-उठते जाते-आते,जय जिनेन्द्र करवाती है।
भोजन-व्यंजन शुद्ध बनाती, अभक्ष्य से हमें बचाती है।
जिनशासन की कथा सुनाकर, हमको रोज सुलाती है।

-विराग शास्त्री

भारत की तस्वीरें

देखिये भारत की दो तस्वीरें - एक ओर जहाँ बच्चों को एक समय का भोजन भी नहीं मिलता, उन्हें जूठा भोजन खाकर पेट भरना पड़ता है तो वहीं दूसरी ओर बच्चे लेपटॉप, मोबाइल के खिलौनों के साथ बड़े हो रहे हैं।

मोबाइल के अति प्रयोग ने जीवन को पराधीन बना दिया है। एण्ड्रायड मोबाइल आवश्यकता कम और दुरुपयोग अधिक सिद्ध हो रहा है। आज ट्रेनों में, बसों में, कॉलेजों और लगभग सभी जगह लोग आपस में बातें कम और मोबाइल पर ज्यादा बातें करने लगे हैं। एक प्रसिद्ध अभिनेता ने यह कहा कि जिस दिन मुझे मेरा एण्ड्रायड न मिले उस दिन मेरा हार्ट फेल हो जायेगा। इससे पहले कि हम मोबाइल के गुलाम हों उसे आप सावधान हो जाइये।

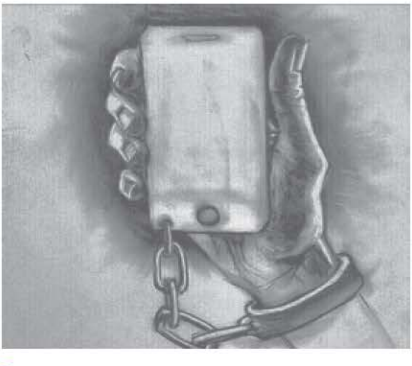

क्या आपने ये सोचा है ..

आजकल जैन समाज में धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों का सैलाब सा आया हुआ है। वर्षभर देश के अनेक नगरों में बड़े-बड़े आयोजन हो रहे हैं। धार्मिक चैनलों पर, सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं में दान देने की अपील की जा रही है।

आज एक जरुरतमन्द व्यक्ति अपने अति सम्पन्न जैन समाज से जब किसी अनिवार्य आवश्यकता की पूर्ति के लिये सहायता मांगता है तो उसे कुछ नहीं मिलता और यदि कुछ मिलता भी है तो बहुत प्रयासों के बाद और जो उसे मिलता है वह उसकी आवश्यकता के सामने बहुत कम होता है। देश की दिगम्बर जैन समाज की कुछ संस्थाओं को छोड़कर किसी से सहायता की उम्मीद भी नहीं की जा सकती और इन संस्थाओं की भी सहयोग देने की अपनी मर्यादा है। वहीं दूसरी ओर दिसम्बर 2015 और जनवरी 2016 के दो महीनों में बुन्देलखण्ड के सागर के आसपास के लगभग 100 किमी के क्षेत्र में 9 पंचकल्याणक सम्पन्न हुये। देश में इसी समय लगभग 50 पंचकल्याणक सम्पन्न हुये और आगामी माह में भी लगभग 20 ऐसे बड़े आयोजनों की प्रतीक्षा है। जिसमें एक आयोजन तो करोड़ों की राशि वाला है। यदि एक पंचकल्याणक का न्यूनतम सामान्य व्यय 50 लाख भी हुआ हो तो समाज का लगभग 350 करोड़ रुपया इन महोत्सवों के आयोजन में व्यय हो गया। इनमें कुछ आयोजन अनिवार्य थे, कुछ अपने व्यक्तिगत स्वार्थ और अपने यश विस्तार के लिये अनिवार्य बनाये गये।

प्रश्न यह है कि इन आयोजनों कितनी धर्मप्रभावना हुई और इन आयोजनों का समाज को स्थायी लाभ कितना हुआ? समाज को मिलने वाला लाभ तो विचारणीय है ही परन्तु समाज के धन का लाभ उस वर्ग को अवश्य हुआ जिनके शासकों ने जैन धर्म की संस्कृति, सभ्यता और ऐतिहासिक विरासत को ध्वंस करने का कार्य किया और साथ ही समाज के कुछ गणमान्य और समाज श्रेष्ठियों के अहं का पोषण हुआ।

समाज को जिनमंदिर के निर्माण में दान देने से मोक्ष और स्वर्ग की सम्पदा का लोभ देने वालों में तथाकथित स्वनाम धन्य नेता और विद्वान भी शामिल हैं। मुझे जिनमंदिरों की स्थापना का विरोध नहीं है, जहाँ जिनमंदिर नहीं है वहाँ तो जिनमंदिर का निर्माण होना ही चाहिये लेकिन हमारे जिनमंदिर विराट और वैभव का प्रदर्शन करने वाले होने चाहिये या आत्मशांति का प्रेरक...? क्या इन जिनमंदिरों में जिनबिम्ब की स्थापना वेदी प्रतिष्ठापूर्वक नहीं हो सकती ? क्या बड़े आयोजनों के नाम पर करोड़ों रुपये व्यय करना आवश्यक है? हो सकता है आप मेरी बात से सहमत हों परन्तु यश और प्रतिष्ठा के लोभी धर्मात्माओं को यह बात धर्म और धर्मायतनों का विरोध ही लगेगी।

एक सामान्य अध्ययन के अनुसार दिगम्बर जैन समाज प्रतिदिन आयोजित होने वाले छोटे-बड़े आयोजनों में हर दिन लगभग 5 करोड़ रुपये दान करता है। इस तरह हर वर्ष लगभग 2000 करोड़ जैन समाज इन आयोजनों में दान देता है परन्तु आश्चर्य है कि इतनी बड़ी राशि से एक भी सार्थक कार्य नहीं दिखता जो समाज के लिये चिरस्थायी लाभ देने वाला हो। जैन समाज का वह वंचित और निर्धन वर्ग

तालियाँ बजाने का कार्य करता है। वीतराग धर्म के नाम पर समाज को चमत्कारों और कर्तावाद के चंगुल में फंसाया जा रहा है।

एक रिपोर्ट के अनुसार ● दाऊदी बोहरा समाज ने अपने समाज के निर्धन वर्ग के बच्चों के अध्ययन में सहायता के लिये राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा मंत्रालय बनाया है।● ईसाई समाज ने अपने संतों और अपनी समाज के दान का सदुपयोग करते हुये चर्च के साथ स्कूलों की स्थापना की। आज पूरे देश में ईसाईयों की 2 लाख 50 हजार शैक्षणिक संस्थायें हैं जो कि सेन्ट थामस, सेन्ट जोसफ, संत जूड, संत जेवियर आदि के नाम से चल रहीं हैं। इनमें से कई संस्थायें 100 साल से ज्यादा पुरानी हैं। हमारे जैन बच्चे ही इन विद्यालयों में जाकर ईसा मसीह की प्रार्थना करने के साथ उनके दर्शन करते हैं। ●गुजराती पटेल समाज भी समाज के उत्थान के लिये अनेक योजनायें संचालित करता है। ● बिलासपुर की गुजराती समाज ने समाज की 25 निर्धन बेटियों का सम्पूर्ण खर्च उठाने का जिम्मा लिया है। इसके लिये वह समाज के प्रत्येक घर से 500 रु. प्रतिमाह एकत्रित करेगा। ● बिलासपुर सिक्ख समाज ने फैसला किया है वे 1 रु. प्रतिदिन निर्धन सिक्ख समाज की बेटियों के पढ़ाई के लिये जमा करेंगे।

श्री तात्या साहब के. चोपड़े मराठी पुस्तक 'जैन आणि हिन्दू' के पृष्ठ 47-48 के अनसुार - भारत में ईसा के 1000 वर्ष पूर्व जैन समाज की संख्या 40 करोड़ थी, ईसा के लगभग 500 वर्ष बाद 24 करोड़ जैन थे, सन् 815 में सम्राट अमोघवर्ष के शासनकाल में 20 करोड़ जैन थे, सन् 1173 में महाराज कुमारपाल के समय 12 करोड़ जैन थे, सन् 1556 में अकबर सम्राट के समय में 5 करोड़ जैन थे, और घटते-घटते यह संख्या आज मात्र 50 लाख रह गई है। इसके अनेक कारण हैं। कुछ वर्ष पूर्व गरीबी के कारण जैन समाज के 28 परिवारों ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया और ईसाई समाज ने उन्हें अहमदाबाद ले जाकर आजीविका उपलब्ध करवा दी। इसका समाचार नवभारत समाचार पत्र में छपा था। दुर्भाग्य यह है कि हमारी समाज के पास जिनमंदिर बनवाने, जिनप्रतिमा विराजमान करने और इसी तरह कार्यों के लिये खर्च करने करोड़ों रुपये है परन्तु उन्हीं मंदिरों को जीवन्त करने वाले पुजारियों, मालियों और जिनवाणी की सेवा करने वाले विद्वानों और पाठशाला के अध्यापकों के लिये श्रेष्ठियों की सोच में संकीर्णता आ जाती है।

प्रत्येक संस्था और समाज विशाल दृष्टिकोण न रखकर मात्र स्वयं के बारे में सोचती है। विभिन्न पंथों, जातियों, उपजातियों में बंटे हुये जैन समाज की दिशा और दशा दोनों ही चिन्तनीय हैं। राष्ट्रीय स्तर पर दिगम्बर जैन समाज की कई संस्थायें पूरे दिगम्बर जैन समाज की प्रतिनिधि संस्था होने का डंका बजातीं रहतीं हैं। उनकी सारी शक्ति इसी में समाप्त हो रही है कि तेरी शर्ट मेरी शर्ट से सफेद कैसे ?

इन सब बातों पर गम्भीरता से चिन्तन और ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। इन सब समस्याओं के बीच कुछ अच्छे कार्य भी हो रहे हैं परन्तु यह पर्याप्त नहीं है। आवश्यकता है स्पष्ट सोच, दूरगामी योजनाओं और पूर्वाग्रह से मुक्त नेतृत्व की। पता नहीं जैन समाज को कब तक इन कार्यों की इनकी प्रतीक्षा करना होगी .....

प्रश्न आपके - समाधान जिनवाणी के

प्रश्न 1- राजस्थान में जैन समाज में सरावगी जाति के लोग होते हैं। सरावगी शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर - श्रावक शब्द का अपभ्रंश सरावगी हो गया है। जो जिनेन्द्र वाणी पर श्रद्धा रखे और जैन आचरण का पालन करे उसे श्रावक कहा जाता है।

प्रश्न 2- क्या गंधोदक लेने के पूर्व और बाद में हाथ धोना आवश्यक है ?

उत्तर - अवश्य। गंधोदक पवित्र जल है अतः उसे हाथ धोकर ही लेना चाहिये। बाद में हमारे जमीन आदि पर लगते हैं इसलिये गंधोदक लेकर भी हाथ धो लेना चाहिये।

प्रश्न 3- तीर्थंकर की प्रतिमा के मध्य में छाती पर एक फूल बना रहता है उसका क्या महत्व है ?

उत्तर - तीर्थंकर के शरीर में एक हजार आठ शुभ चिन्ह होते हैं। उनमें यह फूल के समान चिन्ह भी होता है इसे श्रीवत्स कहा जाता है। यह चिन्ह मात्र तीर्थंकर की प्रतिमाओं पर ही होता है।

प्रश्न 4- मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में अभिवादन में जुहार शब्द का प्रयोग किया जाता है। जुहार का क्या अर्थ है ?

उत्तर - जु - युग के प्रारम्भ में। हा - संसार के दुःख को नष्ट करने वाले। र - स्वपर के धर्म रक्षक अर्थात् भगवान आदिनाथ का परिचायक शब्द है।

प्रश्न 5- भगवान बाहुबली की प्रतिमा में बेल आदि क्यों बनाईं जातीं हैं ?

उत्तर - मुनि बाहुबली की उग्र तपस्या बताने के लिये।

मुसलमान ने की शादी में सूर्यास्त पूर्व बिना जमीकन्द भोजन की व्यवस्था

एक ओर जहाँ जैन समाज के कई बन्धु जानते हुये भी पापों की परवाह न करते हुये विवाह आदि सामाजिक आयोजनों का रात्रि में आयोजन करते हैं और आलू-प्याज आदि जमीकन्द का प्रयोग अपनी शान समझते हैं, वहीं दूसरी ओर मध्यप्रदेश के धार जिले के बदनावर गांव के एक मुस्लिम परिवार हमें सोचने पर मजबूर किया है।

मुस्लिम वोहरा समाज के हातिम बोहरा ने जब अपनी बेटी के विवाह के कार्ड बांटे तो नीचे स्पष्ट रूप से छापा कि रात्रि भोजन त्यागी महानुभाव सूर्यास्त पूर्व सादर आमंत्रित हैं और भोजन में जमीकन्द का प्रयोग नहीं है। जैन समाज को निःसन्देह इससे प्रेरणा लेना चाहिये।

पं.जुगलकिशोरजी मुख्तार द्वारा रचित

मेरी भावना

In English

जिसने राग-द्वेष-कामादिक जीते, सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्षमार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया।।
बुद्ध-वीर-जिन-हरि-हर-ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो।
भक्ति-भाव से प्रेरित हो, यह चित्त उसी में लीन रहो।।1।।

He, who has subdued his passions and desires, who has realised the secret of the Universe in entirety; Who has discouresed upon the teachings of Right Path of liberation for the benefit of all in a quite unselfish manner; who is variously termed buddha, Mahavira, Jina, Hari, Hara, Brahma and Self; In Him, imbued with deep devotion, may this mind (of mine) eternally dwell!

विषयों की आशा नहिं जिनके, साम्य भाव धन रखते हैं।
निज-पर के हित साधन में जो, निश-दिन तत्पर रहते हैं।।
स्वार्थ-त्याग की कठिन तपस्या बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुःख समूह को हरते हैं।।2।।

Those who have no longings left for senseproduced pleasures; Who are rich in the quality of equanimity; Who are day and night engaged in encompassing the good of all - their own as of others; Who undergo the severe penance of selfaffacement with finching - such Enlightened Saints, verily, conquer the pain and misery of mundane existence!

रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उनही जैसी चर्या में यह चित्त सदा अनुरक्त रहे।।
नहीं सताऊँ किसी जीव का झूठ कभी नहीं कहा करूँ।
पर धन वनिता पर न लुभाऊँ, सन्तोषामृत पिया करूँ।।3।।

May I always associate with such aforesaid Holymen; May my mind be constanly occupied with their contemplation; May the longing of my heart be always to tread in their footsteps; May I also never cause pain to any living being. May I never utter untruth; and May I never covet the wealth or wife of another! May I ever drink the nectar of contentment!

शेष भाग अगले अंक में

Translation By ; M.P.Jain, Jaipur
संकलन - श्री सतीश जैन, जबलपुर

पापा! ये लोग जैन नहीं हैं क्या...

जय जिनेन्द्र भाईसाहब!

जयजिनेन्द्रजी! आइये आइये! हम आपका ही इंतजार कर रहे थे।

सॉरी! आने में लेट हो गये । आज रविवार का दिन है और प्रत्येक रविवार को हमारे जिनमंदिर में विशेष पूजन और पाठशाला का कार्यक्रम होता है इसलिये थोड़ा अधिक समय लगता है।

कोई बात नहीं। आप पधारिये।

पापा ! आपके दोस्त जैन नहीं हैं क्या ?- जैनम् ने पापा से पूछा।

ऐसे नहीं बोलते बेटा। मेरा दोस्त जैन है।

तो फिर इनके घर में आलू-प्याज क्यों रखे हैं? हमने तो पाठशाला में यही पढ़ा है कि जो जिनदेव को और उनकी बताये बातों को मानते है उन्हें जैन कहते हैं। भगवान ने बताया है कि आलू-प्याज आदि जमीकन्द में अनन्त जीव होते हैं। तो फिर ये जैन कैसे?

7 वर्षीय जैनम् की बात सुनकर पूरे घर में सन्नाटा हो गया।

भाषण

भाषण दो प्रकार के होते हैं - एक बांस - जैसा दूसरा गन्ने जैसा। बांस जैसा भाषण लम्बा तो बहुत होता है परन्तु एकदम रस रहित होता है जबकि गन्ने जैसा भाषण छोटा होने पर भी अत्यन्त मधुर रस से परिपूर्ण होता है। हमको सदा गन्ने जैसा भाषण करना चाहिये, बांस जैसा नहीं।

- प्रो. वीरसागर जैन, दिल्ली

5100/- श्रीमती सरिता गौतम दोडल द्वारा कलेन्डर प्रकाशन में प्राप्त ।

5100/- श्रीमति प्रियंका नेहल कोठारी, दाहोद द्वारा बाल कविताओं की पुस्तक के प्रकाशन में सहयोग प्राप्त।

1000/- श्री आकाश जैन, औरंगाबाद द्वारा बाल कविताओं की पुस्तक के प्रकाशन में सहयोग प्राप्त।

600/- दादी श्रीमति अमृत देवी के देहावसान के शोक प्रसंग पर श्रीमति कल्पना धर्मपत्नी श्री सुरेशचन्द जी जैन, उदयपुर राज. की ओर से प्राप्त।

जीवन की भूलें

रामायण की एक घटना में जब सीता की अग्नि परीक्षा हो गई तब राम ने सीता से कहा -हे सीते! अब मेरे अपराध क्षमा करो और राजभवन में प्रवेश करो। तब सीता ने कहा - स्वामिन्! मैंने अपने जीवन में तीन बार बहुत बड़ी भूलें की हैं,क्या आप चाहते हैं कि मैं उन भूलों को बार-बार करूँ? तब राम ने पूछा - हे देवि! वे तीन भूलें कौन सी हैं?

तब सीता ने कहा - पहली भूल मुझसे विवाह के समय हुई, जब आपका वरण करने के बाद युद्ध प्रारम्भ हो गया था, यदि मैंने उसी समय आर्यिका व्रत लेकर आत्मकल्याण किया होता तो मुझे आज यह दिन नहीं देखना पड़ता। दूसरे जब आपके स्नेह के कारण जब आपके साथ वनवास गई और तीसरी बार जब रावण ने मेरा हरण किया और अंतिम बार जब वनवास से लौटकर वापस घर आई तब। यदि मैंने इनमें से किसी एक भी प्रसंग पर आर्यिका व्रत धारण किये हाते तो मैं इन सारी झंझटों से दूर रहती। परन्तु अब मैं अब ये गल्तियाँ बार-बार नहीं करना चाहती।

इतना कहकर वह सबसे क्षमायाचना कर एक सफेद साड़ी पहनकर दीक्षा लेने के लिये वन की ओर गमन कर गई।

चहकती चेतना के सदस्य ध्यान दें

चहकती चेतना के सदस्य क्रमांक 1700 से 1900 की सदस्यता अवधि समाप्त हो गई है। यदि आपका सदस्यता क्रमांक इस क्रम में शामिल है तो कृपया अपनी सदस्यता राशि शीघ्र भेजें। अन्यथा नियमानुसार पत्रिका भेजने हम असमर्थ रहेंगे।आप सदस्यता राशि ड्राफ्ट/चैक द्वारा भेज सकते हैं अथवा हमारे बैंक एकाऊन्ट में सीधे जमा कर सकते हैं। राशि जमा करने के बाद आप हमें सूचित करें और अपना पूरा पता हमें एस.एम.एस अवश्य करें।

तीन वर्षीय शुल्क	: 400/-रु. दस वर्षीय शुल्क : 1200/- रु.
खाता नाम	: चहकती चेतना
बैंक का नाम	: पंजाब नेशनल बैंक, फव्वारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्रमांक	: 1937000101030106 IFSC: PUNB0193700
मोबाईल नं.	: 9300642434

एक शौक ऐसा भी...

न्यूज़ीलेण्ड के वेलिंगटन में रहने अरॉन क्यूलिंग एक ऐसे व्यक्ति हैं जो अपनी सारी कमाई समुद्री जीवों की आजादी के खर्च कर देते हैं। अपनी कमाई से वे बाजार से कछुये और अन्य जीवित समुद्री जीवों को खरीदकर उन्हें वापस समुद्र में छोड़ देते हैं। उनका कहना है कि इन जीवों का असली स्थान समुद्र है किसी का घर नहीं। हर जीव को आजादी पसंद है और उनकी आजादी छीनने का हमें क्या अधिकार है। अभी पिछले दिनों उन्होंने 23 हजार के दो कछुये खरीदकर समुद्र में छोड़ दिये। इनके इस पशु प्रेम को कुछ लोगों ने इसका वीडियो बनाकर सोशल साइट्स पर डाल दिया। इनके इस वीडियो को 85 हजार बार देखा गया है। अरॉन की इस भावना की अनुमोदना।

बर्डमेन ऑफ चेन्नई

चेन्नई में रहने वाले शेखर अपने एक खास काम के लिये जाने जाते हैं। वे हर दिन लगभग 4000 तोतों को दाना खिलाते हैं। अपनी कमाई का लगभग आधा पैसा वे इस काम के लिये खर्च करते हैं। ये क्रम 2006 चेन्नई में आई सुनामी बाढ़ के बाद से प्रारम्भ हुआ। शेखर कहते हैं कि सुनामी की बाढ़ में अनेक परिवार बरबाद हो गये और उस समय अनेक पक्षी मर गये, बस तब से ही यह कार्य शुरु हो गया। अब तोते भी उन्हें पहचानते हैं। जब वे दाना लेकर पहुँचते हैं तो तोते उनके आस-पास मंडराने लगते हैं। ऐसा लगता कि मानो तोतों का सामूहिक भोज चल रहा है।

शेखर के इस करुणामयी कार्य के कारण उन्हें बर्डमेन ऑफ चेन्नई के नाम से जाना जाता है।

परोपकार

संस्कृत के महाकवि माघ अपनी उदारता के लिये प्रसिद्ध थे। उन दिनों उनकी आर्थिक स्थिति खराब चल रही थी फिर भी उदारता के भाव पहले जैसे ही थे। एक रात उनके घर पर एक व्यक्ति आया और उनसे बोला - मुझे अपनी बेटी का विवाह करना है और मेरे पास कुछ भी नहीं है। आपकी दानवीरता सुनकर बहुत आशा के साथ आपके पास आया हूँ। आप कुछ सहायता कर दें तो मेरा काम हो जायेगा।

कवि माघ का हृदय करुणा से भर गया परन्तु उनके पास उस समय देने के लिये कुछ नहीं था। तभी उन्होंने अपनी सोती हुई पत्नी के हाथ में सोने के कंगन देखे। उन्होंने धीरे-धीरे एक हाथ का कंगन उतार उस व्यक्ति को दिया और बोले - मैं इस समय मजबूर हूँ। इस समय मैं इतनी ही सहायता कर सकता हूँ। इसे स्वीकार कीजिये।

तभी पत्नी की आंख खुली और वह सारी स्थिति समझ गई। उसने अपना दूसरा कंगन उतारकर माघ को दिया और मुस्कराहट के साथ बोली - भला विवाह जैसे कार्य में एक कंगन से कैसे कार्य होगा ? यह दूसरा कंगन भी आप इन्हें प्रदान करें। माघ पत्नी के इस कार्य अत्यंत प्रसन्न हो गये।

संयम

प्रसिद्ध कवि अब्दुर्रहीम खान खाना के पास एक व्यक्ति आया और उनसे पूछा कि जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण कौनसा संयम है उन्होंने दोहा के माध्यम से उत्तर दिया -

रहिमन जिह्वा बावरी, कर गई सुरग पाताल।
खुद कह भीतर घुस गई, जूती पड़े कपाल।।

अर्थात् सारे संयमों में वाणी कास संयम बहुत महत्वपूर्ण है। जीभ खुद तो बात कहकर मुंह के अन्दर चली जाती है, परन्तु उसका परिणाम कहने वाले को भुगतना पड़ता है।

जिन्दगी की आधी शिकायतें ऐसे ही ठीक हो जायें अगर लोग एक दूसरे के बारे में बोलने के जगह एक दूसरे से बोलना सीख जायें।

चहकती चेतना

श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा जिनवाणी संरक्षण के क्षेत्र में अभिनव पहल

क्या आपके यहाँ धार्मिक पत्र-पत्रिकायें आती हैं ?

क्या उन पत्र-पत्रिकाओं की यथा-योग्य विनय नहीं कर पा रहे हैं ?

क्या आप अपने घर या जिनमंदिर में एकत्रित पत्र-पत्रिकाओं का योग्य समाधान चाहते हैं तो अब आप निश्चिंत हो जाईये।

जिनवाणी संरक्षण केन्द्र

अनेक विद्वानों एवं प्रबुद्ध साधर्मियों के विचारों के अध्ययन के पश्चात् हमारी संस्था ने आपके इस विकल्प के उचित समाधान के लिये जबलपुर में जिनवाणी संरक्षण केन्द्र की स्थापना की है जिसके माध्यम से इन पत्र-पत्रिकाओं का उचित समाधान किया जायेगा। आप अपनी पुरानी पत्र-पत्रिकायें हमें भेज सकते हैं।

कैसे भेजें पत्र-पत्रिकायें -

❖ सर्वप्रथम आप हमसे सम्पर्क करें।

❖ आप हमसे सम्पर्क करके अपनी पत्र-पत्रिकायें सीधे हमें भेज सकते हैं। जीर्ण शीर्ण ग्रन्थ अथवा साहित्य भी स्वीकार किये जायेंगे।

साथ ही ये निवेदन भी स्वीकार करें -

❖ यदि आपके परिवार के अनेक सदस्यों के नाम से एक ही पत्र-पत्रिका आती है अथवा एक सदस्य के नाम से एक से अधिक पत्र-पत्रिकायें आती हैं तो सम्बन्धित पत्रिका के प्रबंधक से विशेष अनुरोध करके अतिरिक्त प्रति बंद करायें।

❖ जिन पत्र-पत्रिकाओं को आपके परिवार में कोई नहीं पढ़ता उन्हें भी बंद करायें।

यह प्रयास करके आप परोक्ष रूप से जिनवाणी के विनय में सहभागी बन सकते हैं।
आशा है दिगम्बर जैन समाज के साधर्मी जिनवाणी संरक्षण की
इस पवित्र भावना में सहयोग प्रदान करेंगे।

निवेदक श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले, मुम्बई

संयोजक - विराग शास्त्री, जबलपुर मोबा. 9300642434 kahansandesh@gmail.com

सहयोग - अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, जबलपुर

साहित्य भेजने का पता –

जिनवाणी संरक्षण केन्द्र

316, मिश्र बन्धु कार्यालय के सामने,मेन रोड, दीक्षितपुरा, जबलपुर (म.प्र.)
मो. 9300642434 Email- kahansandesh@gmail.com

जिनेन्द्र देव के दर्शन से लाभ

दर्शनं जिनसूर्यस्य, संसार ध्वान्त नाशनम्।
बोधनं चित्तपद्मस्य, समस्तार्थ प्रकाशनम् ।।

जिनेन्द्र भगवान रूपी सूर्य का दर्शन संसार रूपी अंधकार का नाश करने वाला, मन रूपी कमल का विकासक तथा समस्त पदार्थों का प्रकाशक है।

श्रावक के छः आवश्यकों में जिनेन्द्र भगवान का दर्शन प्रथम कर्तव्य कहा गया है। जिनेन्द्र भगवान के दर्शन से जन्मों के संचित पापों का क्षय हो जाता है।

जिनेन्द्र भगवान के दर्शन के फल की चर्चा जिनवाणी में इस प्रकार है -

जिनेन्द्र भगवान के दर्शन का विचार करने से	2 उपवास का
जिनेन्द्र भगवान के दर्शन के लिये स्नान आदि करने से	3 उपवास का
दर्शन हेतु घर से निकलने पर	5 उपवास का
कुछ दूरी तक पहुँचने पर	12 उपवास का
मंदिर की आधी दूरी तय करने पर	15 उपवास का
मंदिर के दर्शन करने से	1 माह के उपवास का
मंदिर के आंगन में प्रवेश करने पर	6 माह के उपवास का
मंदिर के द्वार प्रवेश करने पर	1 वर्ष के उपवास का
वेदी के सामने पहुँचने पर	1 हजार उपवास का
जिनप्रतिमा के दर्शन करने से	1 लाख उपवास का
जिनेन्द्र भक्ति-पूजन करने से	अनन्त उपवास का फल मिलता है।

हमें प्रतिदिन जिनेन्द्रदेव के दर्शन अवश्य करना चाहिये ।

(- पद्म पुराण, भाग - 2, सर्ग - 32, श्लोक - 178)
(विशेष - यह सभी फल अन्तरंग विशुद्ध परिणामों से और बिना किसी लौकिक कामना से जिनदर्शन करने पर मिलते हैं)

चिड़ियाघर

मिनी छुट्टी के दिन अपने मम्मी -पापा के साथ चिड़ियाघर गई। वहाँ बहुत सारी रंग-बिरंगी प्यारी-प्यारी चिड़ियाँ थीं, तोते और कबूतर भी थे। मिनी उन्हें छूना चाहती थी, बातें करना चाहती थी, वह उनसे दोस्ती करना चाहती थी। उसे लगा कि वह भी चिड़िया होती तो कितना मजा आता...।

वह दौड़कर पिंजरे के पास गई। परन्तु उसने क्या देखा सारी चिड़ियाँ रो रहीं थीं, उनके आंसूओं निकल रहे थे, वहाँ बहुत गन्दगी होने के कारण बहुत दुर्गन्ध आ रही थी। वे चिड़ियाँ उड़ना चाहती थीं। वे बार-बार पिंजरे से टकराकर घायल हो रहीं थीं।

मिनी ने अपना नन्हा हाथ पिंजरे पर रखा तो एक चिड़िया उसके पास आकर बैठ गई। उसकी आंखों में आंसू थे। वह बोली - मुझे यहाँ से निकलने में मदद करो न! कोई तुम्हें यहाँ बन्द कर दे तो तुम्हें कैसा लगेगा ?

प्लीज..! मुझे बचाओ। वह भूखी थी, उसके पास ही एक चिड़िया मरी हुई पड़ी थी। मिनी यह सब देखकर बहुत जोर-जोर से रोने लगी। उसने पापा से कहा - मुझे चिड़िया कभी नहीं बनना पापा। पापा प्लीज..! आप इन चिड़ियों को यहाँ से बाहर निकाल दीजिये।

मिनी के पापा ने चिड़ियाघर के मालिक से हाथ जोड़कर निवेदन किया और बहुत सारे रुपये देकर उन चिड़ियों को खरीद लिया। मिनी ने तुरन्त पिंजरा खोल दिया। वे सारी चिड़ियाँ बाहर उड़कर आ गईं और खुशी से नाचने लगीं।

मिनी के चारों ओर घेरा बनाकर गीत गाने लगीं।

मिनी तुम प्यारी-प्यारी। दयावान तुम जग में न्यारी।
मिनी मिनी तुम प्यारी प्यारी, थैंक्यू मिनी सखी हमारी।।

स्वाधीन रहने वाले पक्षियों और पशुओं को यदि हम बांधकर रखते हैं तो इनसे उन्हें अपार दुःख होता है और हमें बहुत पाप भी लगता है। इसलिये हमें कभी भी इन्हें बांधकर नहीं रखना चाहिये।

- बा.ब्र.सुमतप्रकाश जी जैन

सावधान !

दवाईयाँ देखकर खायें

आज के समय में धन कमाने के खेल में लोगों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। एक व्यक्ति ने किसी बीमारी में दवाई खाना चाही तो उसकी गोली के अन्दर तार निकला। यदि बिना देखे उसने दवाई खा ली होती तो उस कुछ भी हो सकता था। सावधान! सावधानी ही सुरक्षा है

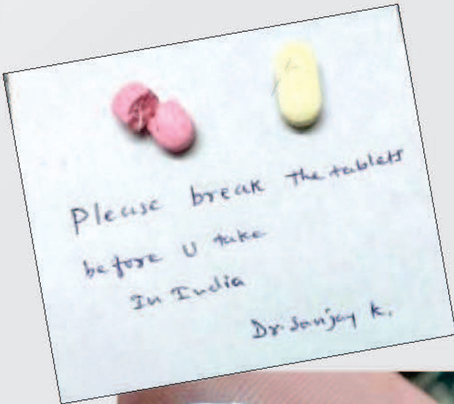

जन्म दिवस की शुभकामनायें

जीवन के रंगीले स्वप्नों में, भूल नहीं आतम जाना।
हो विरागमय स्वस्ति तेरी, अनय स्वरुपी निज ध्याना।।

अनय विराग जैन, जबलपुर 19 जनवरी 2016

जन्म दिवस है स्वाश्रया, हो स्वप्निल सा काम।
भेद ज्ञान प्रज्ञा ग्रहो, निज अनुभूति ललाम।।

स्वाश्रया स्वप्निल शाह, पुणे 17 फरवरी 2016

संसार में सुख सर्वथा
काहु के न दीखे
कोई तन दुखी, कोई मन दुखी
कोई धन दुखी दीखे

अवश्य पधारिये

तपोभूमि पोन्नूर

महामुनिराज आचार्य कुन्दकुन्द देव की तपोभूमि पोन्नूर मलै में आयोजित

आध्यात्मिक युवा शिक्षण शिविर

शनिवार, 20 फरवरी से गुरुवार, 25 फरवरी 2016

: विद्वत् सान्निध्य :

- पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली
- डॉ. संजीवजी गोधा, जयपुर
- डॉ. मनीष शास्त्री, मेरठ

विशेष आकर्षण :-

- आचार्य कुन्दकुन्द की तपोभूमि पोन्नूर एवं आसपास के अनेक प्राचीन जिनमंदिरों के दर्शन
- सीमन्धर भगवान का मनोहारी दर्शन एवं पूजन विधान का मधुर आयोजन
- प्राकृतिक एवं शांत वातावरण में जिनवाणी की अमृत देशना
- पूज्य गुरुदेवश्री के सीडी प्रवचन एवं उसके रहस्यों का लाभ
- प्रोजेक्टर पर कक्षाओं का संचालन

संयोजक - विराग शास्त्री, जबलपुर मो. 9300642434, email: kahansandesh@gmail.com

कार्यक्रम स्थल :

आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर,
कुन्दकुन्द नगर, पोन्नूर मलै, तह वन्देवासी, वडक्कमवाडी
जि.तिरुवण्णामलै 604505

निवेदक : श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले मुम्बई

विशेष : इस शिविर में सहभागिता करने के इच्छुक साधर्मी संयोजक से सम्पर्क करें। स्थान सीमित होने से सीमित साधर्मियों को पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर प्रवेश दिया जायेगा। कार्यक्रम 20 फरवरी को दोपहर से प्रारम्भ होगा।

पोन्नूर बैंगलोर से 360 किमी, पाण्डिचेरी से 88 किमी, वन्दवासी से 8 किमी, चेटपुट से 20 किमी की दूरी पर स्थित है। चेन्नई के कोयम्बडु बस स्टेण्ड से पोन्नूर के लिये सरकारी बस क्रमांक 104, 130, 148, 208, 422 उपलब्ध रहती हैं।

पोन्नूर आवागमन के सम्बन्ध में आप निम्न नम्बरों पर सम्पर्क करें -
पोन्नूरमलै - 04183-291136, 321520, मो. 09976975074 चेन्नई सम्पर्क - श्री दीपक कामदार : 09383370033

श्री कुन्दकुन्द–कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले, मुम्बई द्वारा

पूज्य गुरूदेवश्री कानजी स्वामी की साधना भूमि तीर्थधाम सोनगढ़ में संचालित

श्री कुन्दकुन्द -कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह

विद्यालय की विशेषतायें

- गुजरात के श्रेष्ठ विद्यालयों में से एक चारित्र आश्रम में लौकिक अध्यापन
- पूज्य गुरूदेवश्री की आध्यात्मिक स्थली में अध्ययन का अवसर
- छठवीं से दसवीं तक की अध्यापन सुविधा
- सर्वसुविधा युक्त विशाल संकुल
- समय–समय पर विशिष्ट विद्वानों का समागम
- शारीरिक स्वास्थ्य पर पूर्ण ध्यान
- सभी सुविधायें पूर्णत: नि:शुल्क

- लौकिक अध्ययन के साथ जिनधर्म के दृढ़ संस्कार
- लगभग सभी खेलों की सुविधा
- धार्मिक विषयों का श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा अध्यापन
- वर्ष में दो बार शैक्षणिक तीर्थ यात्रा
- विशाल पुस्तकालय की सुविधा ◆ कठिन विषयों की विशेष कक्षायें
- साप्ताहिक गोष्ठियों एवं प्रतियोगिताओं के माध्यम से व्यक्तित्व विकास

प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ

प्रवेश फार्म जमा करने की अंतिम तिथि 30 मार्च 2016

प्रवेश पात्रता शिविर 20 अप्रेल से 22 अप्रेल 2016

संपर्क : श्री कहान शिशु विहार, राजकोट रोड, सोनगढ़ जि. भावनगर सौराष्ट्र गुजरात

फोन : 02846 244510, सोनू शास्त्री : 9785643277, आतमप्रकाश शास्त्री : 7405439519 विराग शास्त्री : 9300642434

आप प्रवेश फार्म हमारी बेवसाइट www.vitragvani.com से भी डाउनलोड कर सकते हैं। email:-kahanshishuvihar@gmail.com